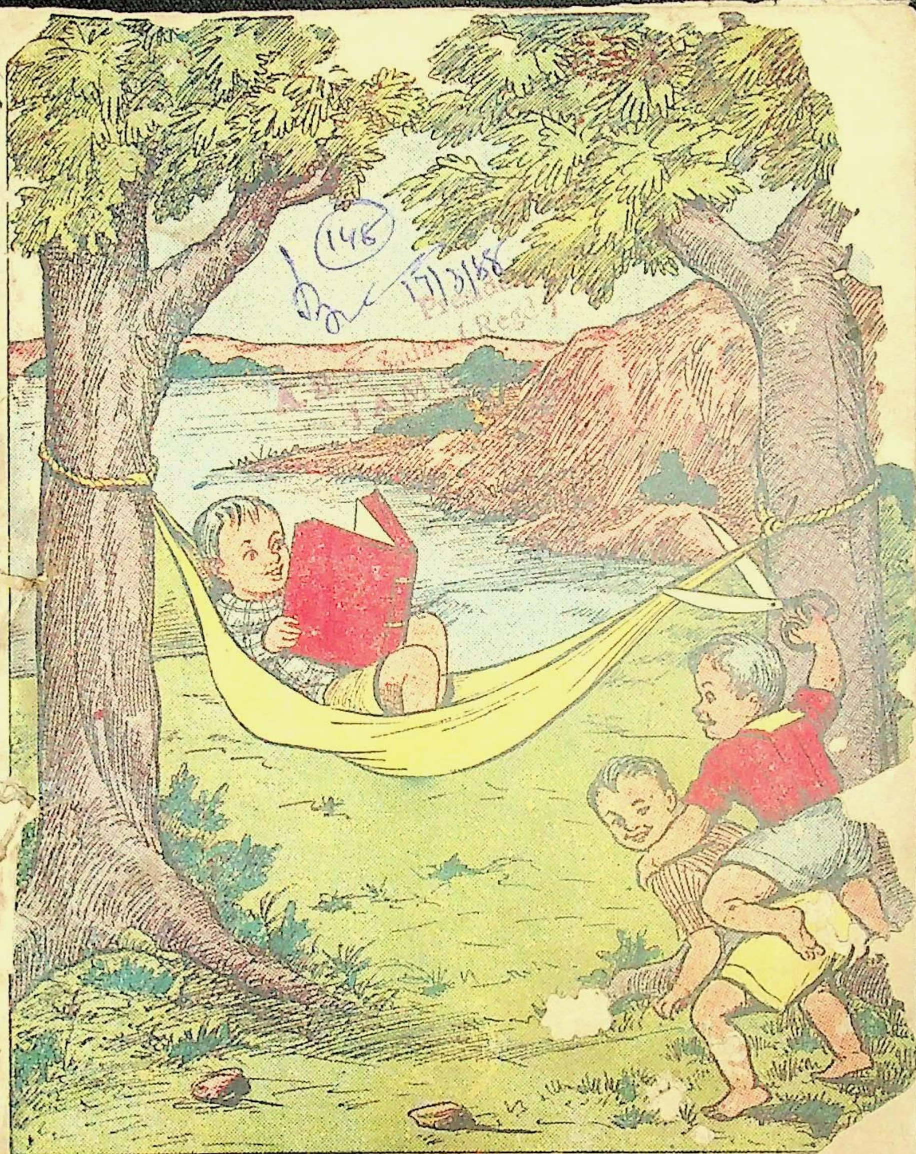


गंगु–मंगु

गंगू मंगू



एस० के० अग्रवाल



पुस्तक मन्दिर
तिलकद्वार, मथुरा

प्रकाशकः—
पुस्तक मन्दिर,
तिलकद्वार मथुरा,



लेखकः—
एस० के० अग्रवाल





मुद्रकः—
हरीहर प्रेस, मथुरा।



संस्करणः—
सितम्बर १९७४



मूल्य सत्तर पैसा

इसमें पढ़िये

★ गंगू मंगू

★ दृढ़ निश्चय

★ गज्जू छज्जू

★ टीन का खिलौना

★ नटखट चन्दू

गंगू–मंगू

विद्यालय के वन में दो चूहे रहते थे। वे बड़े चुलबुले थे, हमेशा किसी न किसी को उल्लू बनाने की तरकीबें सोचा करते। उनमें एक का नाम गंगू और दूसरे का नाम मंगू था। गंगू सुनने में तेज था और मंगू देखने में। इसी योग्यता के कारण दोनों जंगल के सभी जानवरों को छकाया करते थे।

एक दिन दोनों कुर्ता धोती पहिने छड़ी घुमाते हुए अकड़ कर चले जा रहे थे। एका-एक ही गंगू ने किसी के चलने की आहट सुनी। बस उसके कान खड़े होगये। रुककर उसने मंगू का हाथ दबाया और कहा मंगू भैया, कोई आरहा है। जल्दी कहीं छिप जाओ।

मंगू हिम्मत वर था इसलिये अकड़ कर बोला–आने दो। हम भी उसे देखेंगे। हमसे बच कर वह जायगा कहां ?

कहते-कहते उसने गंगू को पकड़ कर आगे की ओर खींचा। और हाथ पकड़ कर जबरदस्ती आगे बढ़ने लगा। डरते-डरते गंगू भी चलने लगा। इतने में ही मंगू ने देखा कि सामने एक सांप चला आ रहा है। उसको देखते ही अपनी सारी शेखी भूल गया। अब उसे अपनी भूल मालूम हुई। गंगू ने उसे बहुत बुरा भला कहा परन्तु अब बुरा भला कहने का समय नहीं था। इसलिये दोनों कहीं छिपने की जगह देखने लगे।

इतने में ही उन्हें एक बिल दिखलाई पड़ा। बस दोनों उसी में घुस गये। साँप ने भी इन्हें देख लिया था भला वह इन्हें क्यों छोड़ने लगा। वह भी जल्दी से दौड़ कर बिल के पास पहुँच गया। और उसमें बिना यह देखे कि बिल कितना बड़ा है, तेजी से अन्दर घुस गया।

जब गंगू-मंगू ने सांप को अन्दर आने की कोशिशकरते हुए देखा तो उनके प्राण सूख

गये । अब उन्होंने सोचा कि हमारे प्राण नहीं बच सकते । हम ऊपर ही कह आये हैं कि मंगू हिम्मतवर था । वह गंगू की तरह घबराया नहीं और कुछ जल्दी-जल्दी सोचने लगा । यकायक उसके दिमाग में एक तरकीब आई । जल्दी से उछलकर वह बोला । गंगू भैया जल्दी २ जमीन खोद डालो हम उसमें से होकर भाग चलेंगे । अब कुट-कुट-कुट जमीन खुदने लगी । इधर साँप का शरीर बिल में बुरी तरह फस गया था । न तो वह बाहर ही जा सकता न अन्दर ही आ सकता था । वह बार-बार आगे मुँह बढ़ा कर उन्हें निगलना चाहता था । परन्तु वहाँ तक उसका मुँह पहुँच ही न पाता । उल्टी उसके शरीर में रगड़ और लगती । इसलिये एक दम भीतर आने की बजाय वह धीरे-धीरे अन्दर की ओर बढ़ने लगा ।

इसी समय पूरी जमीन खुद गई । बस ज्यों ही बाहर आये गंगू तो बाहर निकलते ही

एक दम भगने परन्तु लगाने मंगू कहा–भैया गंगू इसे मजा तो चखाते चलें। फिर ऐसा मौका कब हाथ आयगा।

परन्तु गंगू तो वेहद डर गया था। उसे तो भागने की धुन सबार थी। हाथ छुड़ाते हुए उसने कहा-न भैया कहीं यह बाहार निकल आया तो हम इसके मुहूँ में हो दीखेंगे। और फिर हम ऊसका कर ही क्या सकते हैं। वह इतने बड़े डील डौल का हम छोटे से। भला इसी में है कि दोनों भाग चलें।

परन्तु मंगू भला कब मानने बाला था। उसने उसे जबरदस्ती राजी कर ही लिया। अब दोनों ईंटों के पास पहुँचे। और दो ईं लुढ़का कर बिल की ओर लाने लगे। जल्दी जल्दी ढकेल कर वे उन्हें सांप के पास ला और भद्द से उसके ऊपर गिरादी। अब क्या था सांप बिलबिला गया, क्रोध के मारे उस बड़े जोर की फुसकार मारी। किन्तु ईंट के

बोझ से वह दबा जा रहा था। दूसरे बिलके अन्दर उसका शरीर कसा जा रहा था।

ईंट गिरते ही दोनों चूहे दम तोड़ कर भागे। और सीधे अपने घर जाकर ही दम ली, यद्यपि उन्हें अपने सुन्दर कपड़े फट जाने का दुख तो था, परन्तु इतने बड़े दुश्मन को छकाने में उन्हें जो आनन्द आया उसके आगे वे इस दुख को भूल गये। थोड़ी देर सुख की सांस लेकर उन्होंने कपड़ेबदले और स्नान किया।



दृढ़ निश्चय ।

भारत के गांव में बहादुर नाम का एक लड़का रहता था। वह बहुत कमजोर था, कभी २ उसके जीवन की भी आशा न रह जाती थी।

एक दफा वह अपने पिता के साथ बम्बई शहर में गया। वहां पर ऊँचे २ भवन थे जिन पर कि हनुमान जी वगैरह की मूर्तियां खड़ी थीं बहादुर ने अपने पिता से पूछा कि क्या संसार में ऐसे भी मनुष्य थे ? पिता ने कहा कि एक समय था जब कि शक्ति ही सब कुछ थी। शक्तिहीन मनुष्यों, को मार दिया जाता था। इस उत्तर से बहादुर के मन पर बहुत असर हुआ और वह अब बल-बान बनने की कोशिश करने लगा, लेकिन इसमें कभी २अड़चनें पड़ जाती थीं। कभी

वह कसरत करता तो उसके पिता ही उसे कुछ काम बतला देते कभी उसको दूध घीं भी नही मिलता था लेकिन उसने सभी मुसीबतों का वीरता पूर्वक सामना किया और कुछ ही दिनों में वह अपने गाँव में नामीं पहलवान हो गया।

कुछ दिनों बाद उसका मन इस संसार से ऊब गया इसी समय एक सन्यासी ने उसको ज्ञान की बातें सुनाई। जिससे उसने सन्यास लेने का विचार कर लिया, लेकिन अब उसे ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिलता था, जिससे उसे सन्यासी का चेला बनने का अवसर मिले।

कुछ दिन बाद रात्रि के तीन बजे ज्योंही उसने घर से उठकर चलने का बिचार किया त्योंहीं घर में सब लोग जाग पड़े और बहादुर से पूछा कहाँ जा रहे हो। कुछ देर तक तो वह टालमटूल करता रहा, लेकिन बहुत शपथें दिलाने पर उसने सब हाल बता दिया।

बहादुर को बहुत समझाया, लेकिन वह अपने दृढ़ निश्चय से न हटा। तब उसके माता पिता गांव के जमीदार के पास गए और सब हाल कह सुनाया। तब जमीदार ने भी मसे बहुत समझाया, लेकिन वह न माना।

आखिरकार मीदार ने एक उपाय सोचा उसने गांव के सब पहलवानों को बुलवाया और बहादुर से कहा कि अगर तुम हमारे सब पहलवानों को हरा दोगे तो तुम सन्यास ग्रहण कर सकते और अगर तुम हार गए तो नहीग्रहण करसकते हो।पहलवान और बहादुर की कुश्ती शुरु हुई। बहादुर ने बारी२ से सब को हरा दिया,लेकिन आखिरी पहलवान बड़ा मस्त और बली था। सब लोगों को विश्वास हो गया कि अब की दफा बहादूर हार जायगा। आखिरकार दोनों की कुश्ती शुरु हुई। कभी बहादुर नीचे आता कभी पहलवान नीचे आता अन्त में बहादूर ने पहलवान को अपने दोनों हाथों पर उठाकर जमीन पर जोर से

दे मारा । जिससे पहलवान बेहोश हो गया ।

अब बहादु र बिजय होगया जमीदार ने भी आज्ञा दे दी । मगर जमीदार ने गांव के चारौ तरफ आग लगवादी और यह बात किसीको मालूम न हुई । जब बहादुर सबसे मिलकर गांव की सीमा पर आया तो उसने देखा कि यहाँ तो आग लगी हुई है । अब वह कोई उपाय सोचने लगा । थोड़ी देर बाद उसने कुछ पेमें काट डाले और आग पर बिछ कर पार हो गया । पेड़ो के ऊपर चयने पर उसके पैर झुलस गए, लेकिन थोड़ी देर ही चला होगा कि उसे एक नदी मिली यहाँ पर उसने अपने पैरों को धोया । तब उसे कुछ सन्तोस हुआ । बहादु र तैरना नही जानता था, मब फिर वह कोई उपाय सोचने लगा सोचते २ उसने एक उपाय निकाल लिया उसने कुछ चीड़ के बृक्षों को काटकर नदी मैं बहा दिया और उनके सहारे तैरता २ नदी के पाप हो गया ।

अब बहादुर थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसे सन्यास बाबा मिल गये उन्होंने बहादुर को बड़े प्रेम से सन्यास ग्रहण कराया।



गज्जू—छज्जू

एक बहुत बड़ी नदी थी। उसके पास दो कछुए रहते थे। एक का नाम गज्जू और दूसरे का नाम छज्जू था। गज्जू बड़ा और छज्जू छोटा था। छज्जू चालाक और गज्जू सीधा था। दोनों आपस में गहरे दोस्त थे और एक दूसरे के सुख-दुख में हाथ बटाया करते थे।

एक दिन बड़े सबेरे ही एक जानवर पानी पीने आया। दोनों कछुओं ने उसे खाने की सोची बस घात में लग गये। जैसे ही वह जानवर पानी में घुसा और आधी दूर तक गया बस दोनों ने उसकी टांगें पकड़ लीं और अधिक पानी की ओर खींचने लगे। टाँगें पकड़ते ही जानवर घबड़ाया और एक दम किनारे की ओर भागने लगा। लेकिन ये दोनों भी कुछ कम न थे, खूब खींचा तानी होने

लगी। इतने में जानवर का पैर गज्जू पर पड़ गया।बेचारा गज्जू बुरी तरह दब गया और उसके हाथ से जानवर की टाँग छूटगई। अब छज्जू जी अकेले क्या करता। परन्तु वे हिम्मत करके उसकी टांग पकड़े ही रहा। जानवर भागा और उसके साथ छज्जू भी घिसटता था। किनारे पर आकर कछुए को टांग छोड़ ही देनी पड़ी।

अब छज्जू झल्लाये हुए गज्जू के पास पहुँचा और उसके ऊपर बरस उठा—तुमने उसकी टांग छोड़ी ही क्यों! कुछ भी होता लेकिन तुम्हें टाँग पकड़े रहना चाहिये था। खुद तो छूट कर अलग होगये आफत पड़ी तो हम पर। उसके साथ घिसटते घिसटते सारा शरीर छिल गया है।

ए भैया मैं उस समय क्या करता तुम्हीं बताँओ? उसका सारा बोझ तो मेरे ऊपर आ पड़ा था। दूसरे उसके खुर ही कम पैने नहीं थे। यदि तुम मेरी जगह होते तो तुम भी

ऐसा ही करते और जब तुमने देखा कि मैंने पैर छोड़ दिया है तो तुमको भी छोड़ देना चाहिये था।तुम्हें यह विश्वास तो था ही कि अकेले तुम उससे पार नहीं पा सकते फिर क्यों उसके साथ किनारे तक गये। खुद को तो अकल नहीं ओर दूसरों को नाम धरते हो। हां तुममें बड़ी अकल है अच्छा अक्लमन्द साहब आज से हमारी तुम्हारी। बस। न हमें तुमसे कोई काम है न तुम्हें ! हम अपनी राह जाते हैं तुम अपनी राह जाओ।

यह कह छज्जू जीमुँह फेरकरचल दिये गज्जूजी मुँह लटका कर कुछ सोचते ही रह गये। थोड़ी देर में ही छज्जू जी को छेकाने की एक तरकीब उनके दिमाग में आगई बस वे उसे खोजने चले।

दिन भर ढूढ़ते २ रात हो गई परन्तु गज्जू को छज्जू न मिले। हारकर वे घर को ओर चले ! घर को ओर चले ! घर पहुँचते हीं टाँग फैलाकर वह बिस्तर पर जा लेटा

दूसरे दिन वे फिर छज्जू को ढूड़ने चले। इस बार इन्होंने छज्जू को सूखी हड्डी चबाते देखा। दौड़कर वे उसके पास पहुँचे। और बोले छज्जू भैया राम राम।

पर छज्जू भला उसकी क्यों सुनते। वे तो हड्डी चूसने में लगे थे। और सुनकर भीं उन्होंने अनसुनी कर दी, पर जब गज्जू बार-बार खुशामद करने लगे तो ऊपरी मन से बोले-कहो भाई क्या है तुम सूखी हड्डी क्यों चूस रहे हो। मुझे एक ऐसी जगह मालूम जहाँ पड़े-पड़े आराम से खाया करो। कभी समाप्त होने में ही न आये भैया हम तुम तो ऐसी ही जगह चलें। बस हमें यह सब झंझट करने की जरूरत न होगी।

छज्जू के मुँह से यह सुनते ही पानी भर आया। लेकिन राजी देर में हुआ। अब वह गज्जू के साथ हो लिया।

गज्जु उसे लेकर दूसरी जगह पहुँचा जहां एक शिकारी ने एक जाल डाल रखा

था। जाल के अन्दर ताजा माँस रखा था। उसे देख छज्जु के मुँह से लार टपक पड़ी जल्दी से वह बोला-वाह गज्जू भैया जगह तो तुमने एक ही ढूंढ़ी। परन्तु एक मुश्किल है कि इसके अन्दर कैसे पहुंचा जाय तुम इसके दूसरी ओर जाकर दरवाजा ढूंढ़ो और मैं इसमें इधर ढूढ़ता हूं।

अच्छा कहकर ज्यों ही गज्जु ने मुंह फेरा छज्जु झटसे जाल के उस दरवाजे में घुस गया जिसे उसने पहिले ही देख लिया था। परन्तु यह सोचकर कि सब गोश्त हमारे खाने के ही काम में आजायगा उसने गज्जु को टरका दिया। और खुशी-खुशी दरवाजे में घुस गया। परन्तु यह क्या, उसके घुसते ही दरवाजे का खटका एक दम बन्द होगया। परन्तु उसने इसकी चिन्ता न कर गोश्त पर मुंह मारा। और धीरे-धीरे खाने लगा। इधर गज्जु मन मन ही मन हंस रहा था।

थोड़ी देर में जब छज्जु का पेट भर गया तो वह दरवाजे पर गया। किन्तु उसे बन्द देखकर चकराया, और इधर-उधर टक्कर मारने लगा। लेकिन काफी कोशिश के बाद जब दरवाजा न खुला तो उसने गज्जु को पुकारा।

गज्जु सामने आकर बोला—कहो छज्जु भैया मजे में हो।

मजे में तो हूँ, परन्तु इसका दरवाजा तो खोलो!

कैसा दरवाजा, यह उस दिन बेकार का झगड़ा करने का मजा है। अब रहो इसी में बन्द। यह कहकर आंखें मटकाता हुआ चला गया।

छज्जु को अब उसकी चालाकी समझ में आगई। क्रोध में आकर उसने बहुत हाथ पैर पीटे। परन्तु सब बेकार रहा। हार कर चुप बैठ गया।

टीन का खिलौना

एक कुम्हार था ! वह बहुत गरीब था उसके बर्तन भी बहुत कम बिका करते थे। इस लिए हमेशा उसके घर में खाने की हाय हाय मचा करती थी इससे वह बहुत दुखी रहा करता था। और इस गरीबी से छुटकारे का उपाय सोचा करता था।

एक दिन जङ्गल में वह मिट्टी खोदने गया। एक जगह उसे अच्छी मिट्टी दिखाई दी। बस उसने वहीं खोदना प्रारम्भ कर दिया।

खोदते खोदते उसे एक टीन का सुन्दर बालक मिला। यह बालक उसे अच्छा लगा। इसलिये उसने इसे अलग कर लिया। और जब मिट्टी खोद चुका तो बच्चे को भी जेब में रखकर घर ले आया। कुम्हार के छोटे लड़के रघू ने इसे सबसे अधिक पसन्द किया। वह उसे छाती से चिपटाये हुये फिरने लगा।

कभी वह उसे खाना खिलाता। कभी पानी पिलाता और दिन भर उसके साथ खेलता रहता।

एक दिन जब कि रघू उससे खेल रहा था, एक मेंढ़क वहां आया। और जोर जोर से टर टर करने लगा। बालक ने उसे लकड़ी से भगाना चाहा। लेकिन भला वह क्यों भागता। इधर उधर जाकर फिर वह वहीं आजाता। अब तो उसको गुस्सा आगया। लकड़ी को दोनों हाथों से ऊँचा करके जैसे ही उसने मेंढ़क को भगाना चाहा कि मेंढ़क टीन के बच्चे को लेकर वहाँ से चम्पत हो गया।

अब रघू बड़ा घबराया। सब कुछ छोड़ कर वह मेंढ़क के पीछे भागा। परन्तु वह भी कम चालाक न था। दौड़ कर बस तालाब में जा कूदा। अब रघू हाथ मलता रह गया। और रोता रोता घर पहुँचा। घर पर वह खिलौने के लिये मचलने लगा। लेकिन वही

खिलौना कहांसे आता। कुम्हारने उसे और कई प्रकार के खिलौना दिये परन्तु उसने तो उसी टीन के बालक की रट लगा रखी थी। आखिरकार क्रोध में आकर कुम्हार ने उसके दो चार चाँटे लगा दिये। और उसे घरसे निकाल दिया।

रोता रोता रघू उसी तालाब के किनारे टीन के बच्चे को ढुड़ने के लिये वह तालाब में घुसा। और हाथ डाल कर उसे देखने लगा। बहुत देर प्रयत्न करने पर भी उसको वह बालक तो न मिला परन्तु एक हरी बुटी उसे अवश्य मिल गई। वह बुटी उसे कुछ विचित्र जान पड़ी इसलिये उसने उसे अपनी जेब में रख लिया। और बाहर निकल आया।

मेंढ़कों का राजा उस समय बीमार था। उसने यह घोषणा कर रखी थी कि जो कोई भी मुझे अच्छा कर देगा उसे मैं एक इनाम

दूंगा। परन्तु यह पता नहीं था कि वह इनाम क्या है।

एक मेंढ़क से रघ्घू ने भी यह घोषणा सुनी। उसके भी मन में आया कि मैं भी वैध बन कर राजा के यहां जाऊँ और बूटी की परीक्षा करूँ। पहिले तो उसे डर लगा। क्योंकि वह उस मेंढ़क की ताकत देख चुका था। परन्तु फिर साहस करके उसने राजा के यहाँ जाने का निश्चय कर लिया।

दूसरे दिन सैकड़ो दुखों को उठाता हुआ वह राजा के दरबार में पहुँचा। और स्वयं को एक वैध बताया पहिले तो दरबारी मिले। और बोले—यह छोटा सा लड़का वैध गीरी क्या जानता होगा। वैसे ही मजाक करने आया है। अगर राजा सहाब को कहीं गुस्सा आगया तो वे इसे मार कर न निकाल दे।

अब रघ्घू दरवाजे पर लोट गया। और

बोला, जब तक मुझे अन्दर न जाने दोगे मैं यहीं पड़ा रहूँगा।

अब तो दरबारी चिन्ता में पड़े। खैर उन्होंने कुछ सोचकर उसे अन्दर जाने की आज्ञा दे दी। रघू राजा के पास पहुँचा। और अपनी जड़ी घिस कर उसे पिला दी जडी गुणकारी तो थी। शीघ्र ही उसने अपना असर दिखलाना शुरू किया। धीरे धीरे राजा चंगा होने लगा एक महीने बाद मेंढकों का राजो बिल्कुल चंगा होगया। वह रघू पर बहुत खुश हुआ। और उसे बहुत इनाम दिया। अब रघू राजा के यहाँ सुख से रहने लगा। लेकिन अब भी वह बहुत दुखी रहता था।

एक दिन राजा ने उससे इसका कारण पूछा। इस पर रघू बोला-महाराज मेरा एक टीन का खिलौना एक मेंढक ने छिन लिया है। वह खिलौना मुझे बहुत प्यारा

था। यदि आप उस खिलौने को मुझे दिल-बादें तो मैं आपका बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।

राजा को यह सुनके बडा दुख हुआ। उसने उसी समय चार सिपाही खिलौने ढूढ़ने भेजे। रघू ने उनको उस तालाब का पता बतला दिया। बस सिपाही उस तालाब पर पहुँचे। और उस खिलौने को ढूँड निकाला। रघू खिलौना खोजने में इसलिये असफल रहा था कि उस मेंढक ने उसे एक बिल में छिपा दिया था। परन्तु उन सिपा-हियों के लिये यह क्या मुश्किल था। खिलौने के साथ में उन्होंने उस मेंढ़क को भी पकड़ लिया और उसे दरबार में हाजिर किया।

राजा साहब ने खिलौना रघू को दे दिया जिसे पाकर वह फूला न समाया और उस मेंढक को चार वर्ष की सजा सुनादी।

कुछ दिन राजा की महमानी करने के बाद रघू बहुत सा धन लेकर अपने घर पहुँचा। उसके माता पिता अब उसके आने

की आशा छोड़ चुके थे। और बहुत दुखी हो रहे थे। परन्तु उसको देखकर वे बहुत खुश हुए। और रघू के लाये हुए धन से चैन की वंशी बजाने लगे। रघू भी कम खुश न था। क्योंकि उसे उसका प्यारा खिलौना मिल गया था।



नट खट चन्दू

सेठ रामनाथ बड़े धनी थे। उनके यहां लाखों रुपये इधर से उधर होते रहते थे। शहर के रहीस लोगों में उनका नाम था। मौज आती तो अपने नौकरों को बड़ा प्यार करते। परन्तु अक्सर वे उन्हें डांटा ही करते थे। और कभी-कभी उनकी तनख्वाह भी काट लेते। इसलिये उनके नौकर उनसे बहुत दुखी थे। और हमेशा उन्हें मजा चखाने की की सोचा करते।

उनके नौकरों में चंदू बहुत नटखट था। अजीब २ बातें उसके दिमाक में भरी रहती। कभी-कभी अपने साथियों को वह बहुत छकाता। और उनसे रुपये भी ऐंठ लेता परन्तु बाद में दया कर उन्हें रुपये देता था। इसलिये सभी उससे बहुत खुश थे, सेठजी

को छकाने में वह डरता था। क्योंकि उसकी नौकरी जो घट जाती।

बहुत दिनों तक चन्दू डरता रहा, परन्तु सेठजी अपनी हरकतों से बाज ही न आते थे इसलिये तंग आकर एक दिन उन्हें पूरी सजा देने का निश्चय कर लिया और किसी ऐसे ही मौके की ताक में सोचने लगा।

एक दिन सेठजी टट्टर की खिड़की पर लेटे हुए थे। और धीरे-धीरे अपनी चिकनी तोंद पर हाथ फेर कर खुश हो रहे थे,

यकायक चन्दु भी इधर आ निकला, उसने ऊपर देखा तो खिड़की की चटकनी को ढीली पाया। एक दम ही उसके दिमाग में एक बिचित्र बात घुम गई। उसने सोचा यदि मैं इस चटकनी को खोल दूँ तो वे नीचे गिर पड़ेंगे तो कैसा मजा आयेगा, अहा लेकिन इतने से ही उसे संतोष न हुआ।

इस समय उसे बच्चों के खेलने की एक

छोटी गाड़ी दीखी बस अब क्या उसने गाड़ी को ठीक खिड़की के नीचे रख दिया। जहां गाड़ी रखी थी वहाँ से नीचे ढलवा जमीन गई थी। जहाँ पर एक कुआ बन रहा था।

अब उसका खेल बन गया, यदि सेठजी गाड़ी पर गिरे तो कुए तक ले जायगी, और उन्हें कुए में गिरा देगी। तब सेठजी अपनी भारी आवाज में हाय तोबा मचायेंगे, सब नौकरों के सामने उनकी चीख चिल्लाहट बड़े रंग लावेगी।

लेकिन सेठजी के पास जाना और उनके पास बैठने के लिये भी तो कोई बहाना चाहिये क्यों कि सेठजी पैसे के साथ समय के भी बड़े कंजूस थे लेकिन उसके तेज दिमाग ने उसकी भी तरकीब निकाल ली जल्दी-जल्दी उसने तीन चार चिट्ठियां लिखा डाली, इसके बाद उसने अपने तीन चार साथियों को आवाज दी। आवाज सुनते ही तीन चार नौकर ऊपर आगये। उसने उन्हें पूरी तरकीब

बतादी। और बोला—तब तक तुम लोग सेठ जी को कुए से निकालने का इन्तजाम भी कर लो क्योकि हम सेठजी को जान से मारना नही चाहते। बल्कि तमाशा ही देखना चाहते हैं। यह कह कर चन्दू ऊपर पहुँचा और सेठ जी से बोला-सेठजी ये तीन चार चिट्ठियाँ आई हैं, इनका जबाब आप लिख दीजिये ताकि मैं इन्हें दे आऊँ।

कह कर चंदू वहीं बैठ गया। सेठजी पत्र लेकर पढ़ने लगे। इतने में ही चंदु धीरे-धीरे हाथ ले जाकर चटकनी खोलदी। चटकनी का खुलना था सेठजी अरेरे कहते हुए नीचे गिरे। जैसे ही नीचे रखी हुई गाड़ी में वे गिरे वैसे ही गाडी कुए की ओर लुढ़क चली। साथ में सेठ जी भी चले।

एक गड़ाप की सी आवाज हुई और सेठ जी हाय २ करते कुए में गिर पड़े।

वहाँ सब सामान तो पहिले ही से तैयार

था, जल्दी२ उन्होंने कुए में टंकी गिरादी, और जोर से बोले—सेठजी इसमें बैठ जाइये। सेठजी में कुछ दम तो रह नहीं गया था। परन्तु बल लगाकर बड़ी मुश्किल से टंकी में चढ़े। चन्दू वगैरह ने उन्हें ऊपर खीच लिया और एक मुलायम बिस्तरे पर सुला दिया।

इतने ही में डाक्टर साहब आगये और सेठजी को कमरे में देखने चले गये। डाक्टर के हुक्म से सब नौकर नीचे आगये, और सेठ जी के गिरने के समय के दृश्य को याद पर करके खुश होंने लगे, और बोले--सेठजी की अकल दुरुस्त हो जायगी। बहुत हमें तंग किया करते थे।

वास्तव में उनका सोचना ठीक ही निकला। सेठजी ने अच्छे होने के बाद उन्हें तंग करना छोड़ दिया परन्तु हां एक कुशल हुई कि सेठ जी के गिराने वाले का भेद न खुला।



सिर्फ टाइटिल पेज शर्मा प्रेस, हाथरस में मुद्रित ।